हिंद महासागर के रणनीतिक महत्व के संदर्भ में भारत–मालदीव संबंध

राजश्री स्वामी

शोधार्थी

राजकीय महाविद्यालय श्रीडूंगरगढ़

हंसा चौधरी

शोध निदेशिका

राजनीतिक विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

Email - rajshreeswamirao@gmail.com

Mobile – 8619632126

सारांश :

हिंद महासागर अपने व्यापारिक मार्गों, प्राकृतिक संसाधनों और सुरक्षा चुनौतियों के कारण वैश्विक भू–राजनीति में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस महासागर के रणनीतिक महत्व के संदर्भ में भारत और मालदीव के बीच संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक हैं। यह शोध पत्र भारत और मालदीव के द्विपक्षीय संबंधों का विश्लेषण करते हुए उनके साझा हितों और क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान को रेखांकित करता है। शोध में भारत की 'पड़ोसी प्रथम' नीति और 'सागर' दृष्टिकोण की भूमिका पर चर्चा की गई है, जो हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा और विकास सुनिश्चित करने पर केंद्रित हैं। इसके साथ ही, मालदीव की भू–राजनीतिक स्थिति और उसकी सुरक्षा तथा आर्थिक निर्भरता पर चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' और 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' नीति के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। मालदीव की सुरक्षा में भारत द्वारा किए गए योगदान, जैसे 1988 के तख्तापलट प्रयास के दौरान 'ऑपरेशन कैक्टस,' समुद्री निगरानी में सहायता, और आतंकवाद–रोधी क्षमताओं के विकास पर प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा, नीली अर्थव्यवस्था, जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चुनौतियां, और बहुपक्षीय सहयोग के मंचों (जैसे BIMSTEC और IORA) के माध्यम से भारत और मालदीव के बीच उभरते

सहयोग के क्षेत्रों का अध्ययन किया गया है। यह शोध पत्र दर्शाता है कि हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता और सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए भारत और मालदीव का आपसी सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। साझा चुनौतियों का समाधान करने, क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ाने, और समावेशी विकास को प्रोत्साहित करने के लिए इस संबंध को और मजबूत करना अनिवार्य है। यह शोध भारत और मालदीव के संबंधों को एक रणनीतिक दृष्टि से समझने और उनके माध्यम से हिंद महासागर के भू–राजनीतिक महत्व का उपयोग करने की दिशा में व्यावहारिक मार्ग प्रशस्त करता है।

1. भूमिका

हिंद महासागर दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण महासागरों में से एक है, जो अपने भौगोलिक स्थान और संसाधनों के कारण वैश्विक भू–राजनीति में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। यह महासागर एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीपों से घिरा हुआ है और इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 7.4 करोड़ वर्ग किलोमीटर है। इस महासागर के माध्यम से विश्व के 80: से अधिक तेल का परिवहन होता है, जिससे यह ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम बनता है (अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन, 2022)।

हिंद महासागर में स्थित जलसंधियां, जैसे मलक्का जलसंधि (Strait of Malacca), होर्मुज जलसंधि (Strait of Hormuz), और बाब–अल–मंदेब जलसंधि (Bab-el-Mandeb), इसे रणनीतिक रूप से और भी महत्वपूर्ण बनाती हैं। मलक्का जलसंधि एशिया और प्रशांत महासागर को जोड़ने का मुख्य मार्ग है, जहां से प्रतिदिन 1 लाख से अधिक जहाज गुजरते हैं। इन जलसंधियों पर किसी भी प्रकार का भू–राजनीतिक तनाव वैश्विक व्यापार को बाधित कर सकता है। भारत के लिए हिंद महासागर की भौगोलिक स्थिति और महत्व दो दृष्टिकोणों से अत्यंत प्रासंगिक है। पहला, यह महासागर भारत की लगभग 7,500 किलोमीटर लंबी समुद्री सीमा के साथ जुड़ा हुआ है। दूसरा, भारत के प्रमुख बंदरगाह, जैसे मुंबई, चेन्नई और कोच्चि, इस महासागर से व्यापार और सामरिक गतिविधियों के लिए अत्यधिक निर्भर हैं। इसलिए, हिंद महासागर न केवल भारत के

आर्थिक हितों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भी अनिवार्य है (विश्व व्यापार संगठन, 2020)।

भारत और मालदीव के ऐतिहासिक एवं रणनीतिक संबंधों का परिचय

भारत और मालदीव के संबंध हजारों वर्षों से सांस्कृतिक और व्यापारिक संपर्कों पर आधारित हैं। प्राचीन काल में मालदीव पर भारतीय संस्कृति और धर्म, विशेष रूप से बौद्ध धर्म, का गहरा प्रभाव पड़ा। इसके अलावा, समुद्री व्यापार मार्गों पर स्थित होने के कारण, मालदीव भारतीय व्यापारियों के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा है। आधुनिक युग में, 1965 में जब मालदीव ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की, तब भारत उन पहले देशों में से था जिसने इसे औपचारिक मान्यता दी (भारत के विदेश मंत्रालय, 2021)। 1972 में दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित हुए, जो लगातार समय के साथ मजबूत हुए। 1988 में, जब मालदीव में तख्तापलट का प्रयास हुआ, तो भारत ने 'ऑपरेशन कैक्टस' के माध्यम से न केवल तख्तापलट को विफल किया, बल्कि मालदीव की सुरक्षा को भी सुनिश्चित किया। इस घटना ने भारत को मालदीव के एक विश्वसनीय रणनीतिक साझेदार के रूप में स्थापित किया ((भारत के रक्षा मंत्रालय, 1988)।

वर्तमान समय में, मालदीव हिंद महासागर के केंद्र में स्थित एक छोटा द्वीपीय राष्ट्र होने के बावजूद, अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्षेत्रीय और वैश्विक ताकतों, जैसे भारत और चीन, के बीच भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का केंद्र बन चुका है। मालदीव में चीन के बढ़ते निवेश और उसकी 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति ने भारत के लिए नई चुनौतियां खड़ी की हैं। ऐसे में, भारत के लिए मालदीव के साथ मजबूत संबंध बनाए रखना उसकी समुद्री सुरक्षा और भू–राजनीतिक स्थिरता के लिए अनिवार्य हो गया है (भारत के विदेश मंत्रालय, 2020)।

शोध का उद्देश्य

भारत और मालदीव के संबंधों का विश्लेषण

भारत और मालदीव के संबंधों का अध्ययन करना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ये न केवल द्विपक्षीय लाभ पर आधारित हैं, बल्कि व्यापक क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक सुरक्षा पर भी प्रभाव डालते हैं। भारत और मालदीव के संबंध तीन प्रमुख आयामों पर आधारित हैं:

- **सुरक्षा सहयोग :** मालदीव के द्वीप हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। भारत ने समुद्री निगरानी, आतंकवाद–रोधी प्रयासों, और मालदीव की सैन्य क्षमताओं को मजबूत करने में मदद की है। उदाहरण के लिए, भारत ने मालदीव को तटीय निगरानी रडार प्रणाली (Coastal Radar Surveillance System) स्थापित करने में सहायता दी है ((कार्नेगी शांति संस्थान, 2021)।
- **आर्थिक साझेदारी :** मालदीव की अर्थव्यवस्था पर्यटन और मछली पालन पर आधारित है। भारत ने इस क्षेत्र में निवेश के साथ–साथ बुनियादी ढांचे के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2020 में, भारत ने मालदीव को 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर की वित्तीय सहायता प्रदान की, जिससे द्वीपों को आपस में जोड़ने वाले बुनियादी ढांचे के विकास में मदद मिली (मालदीव का वित्त मंत्रालय, 2020)।

चीन की चुनौती

मालदीव में चीन के बढ़ते निवेश, विशेष रूप से 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' के तहत, ने भारत के लिए नई चुनौतियां पैदा की हैं। यह निवेश मालदीव की कर्ज निर्भरता को बढ़ा रहा है, जिससे उसके भारत के साथ संबंध प्रभावित हो सकते हैं।

हिंद महासागर क्षेत्र में उनकी साझेदारी का महत्वः भारत और मालदीव की साझेदारी हिंद महासागर में सुरक्षा, स्थिरता और विकास सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। यह साझेदारी निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों में प्रासंगिक हैः

- **सामरिक महत्वः** हिंद महासागर के प्रमुख जलमार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत और मालदीव का सहयोग आवश्यक है। समुद्री डकैती और आतंकवाद के बढ़ते खतरों को देखते हुए, दोनों देशों ने संयुक्त नौसैनिक अभ्यास (जैसे 'एक्सरसाइज एक्यूला') के माध्यम से अपनी क्षमताओं को मजबूत किया है (अंतर्राष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा एजेंसी, 2022)।
- **जलवायु परिवर्तन का प्रभाव :** समुद्र स्तर में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कारण मालदीव अस्तित्व संकट का सामना कर रहा है। इस संदर्भ में, भारत द्वारा दी जा रही तकनीकी और वित्तीय सहायता, जैसे सौर ऊर्जा परियोजनाएं, मालदीव की सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं।
- **क्षेत्रीय स्थिरताः** भारत और मालदीव का सहयोग न केवल हिंद महासागर क्षेत्र की स्थिरता बनाए रखने में मदद करता है, बल्कि यह एक समावेशी इंडो–पैसिफिक रणनीति को भी प्रोत्साहित करता है।

2. हिंद महासागर का रणनीतिक महत्व

हिंद महासागर न केवल एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के बीच स्थित है, बल्कि यह अंतर्राष्ट्रीय भू–राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र भी है। यह महासागर न केवल व्यापार और परिवहन के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि ऊर्जा आपूर्ति, प्राकृतिक संसाधनों और सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी विश्व स्तर पर अत्यधिक रणनीतिक है। इस महासागर में क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा इसे और अधिक जटिल बनाती है।

भौगोलिक महत्व

हिंद महासागर का भौगोलिक महत्व इसे अन्य महासागरों से अलग करता है। यह महासागर तीन महाद्वीपोंकृएशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया को जोड़ता है, और इसका पानी दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों से होकर गुजरता है। मलक्का जलसंधि, होर्मुज जलडमरूमध्य, और बाब–अल–मंदेब जैसे महत्वपूर्ण जलमार्ग इस महासागर का हिस्सा हैं। इन जलमार्गों के जरिए तेल, गैस और अन्य व्यापारिक वस्तुओं का परिवहन होता है।

विशेष रूप से, मलक्का जलसंधि को एशिया और प्रशांत महासागर के लिए "जीवन रेखा" माना जाता है। यह जलमार्ग चीन, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों के लिए ऊर्जा आपूर्ति का प्रमुख स्रोत है। अनुमानित 80: वैश्विक तेल व्यापार और लगभग 40: कुल व्यापार हिंद महासागर के माध्यम से होता है, जो इसे विश्व अर्थव्यवस्था के लिए अपरिहार्य बनाता है (अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन, 2022)।

प्राकृतिक संसाधन

हिंद महासागर को प्राकृतिक संसाधनों के लिए भी एक अमूल्य खजाना माना जाता है। इस महासागर में तेल और गैस के बड़े भंडार हैं, जिनका खाड़ी देशों, अफ्रीकी देशों और अन्य एशियाई देशों द्वारा बड़े पैमाने पर दोहन किया जा रहा है। भारत, ईरान और सऊदी अरब जैसे देश अपनी ऊर्जा आपूर्ति के लिए हिंद महासागर पर निर्भर हैं। इसके अलावा, हिंद महासागर में गहरे समुद्र में खनिज संपदा जैसे मैंगनीज, तांबा, और कोबाल्ट का विशाल भंडार है, जो आधुनिक उद्योगों और तकनीकी विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। समुद्री जैव विविधता, विशेष रूप से मछली और अन्य समुद्री जीव, इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। भारत और मालदीव ने सौर ऊर्जा और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में इस महासागर की क्षमता का उपयोग किया है, जिससे उनके ऊर्जा संकट में कमी आई है (अंतर्राष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा एजेंसी, 2022)।

सुरक्षा चुनौतियां

हिंद महासागर क्षेत्र कई सुरक्षा खतरों का सामना कर रहा है। समुद्री डकैती, आतंकवाद और अवैध व्यापार जैसे मुद्दे यहां की प्रमुख समस्याएं हैं। सोमालिया और यमन के पास समुद्री डकैती के लगातार मामले अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए चुनौती बने हुए हैं। इसके अलावा, कई आतंकवादी समूह हिंद महासागर के समुद्री मार्गों का उपयोग हथियारों और मानव तस्करी के लिए करते हैं। भारत, अमेरिका और अन्य देशों ने इन खतरों का मुकाबला करने के लिए संयुक्त रूप से कई निगरानी और सुरक्षा अभियान चलाए हैं। भारतीय नौसेना ने समुद्री निगरानी प्रणालियों को सुदृढ़ करते हुए, हिंद महासागर में अपनी

उपस्थिति को मजबूत किया है। भारत ने मालदीव, श्रीलंका और अन्य पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाकर क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित की है (भारतीय नौसेना, 2019)।

चीन का प्रभाव

चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) और स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स नीति ने हिंद महासागर में शक्ति संतुलन को बदल दिया है। BRI के तहत चीन ने श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह, पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह और म्यांमार के क्याउकप्यू बंदरगाह का विकास किया है। इन परियोजनाओं ने चीन को हिंद महासागर क्षेत्र में एक प्रमुख शक्ति बना दिया है। भारत के लिए यह एक रणनीतिक चुनौती है। चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' नीति ने हिंद महासागर में उसकी सैन्य और आर्थिक उपस्थिति को बढ़ा दिया है। इससे भारत को अपनी समुद्री नीति पर पुनर्विचार करना पड़ा है। भारत ने इस क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए सागर (सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फॉर ऑल इन द रीजन) पहल के तहत अपने पड़ोसी देशों के साथ सुरक्षा और व्यापारिक सहयोग बढ़ाया है (कार्नेगी शांति संस्थान, 2021)।

हिंद महासागर का रणनीतिक महत्व केवल इसके प्राकृतिक संसाधनों और भौगोलिक स्थिति तक सीमित नहीं है। यह क्षेत्र वैश्विक शक्ति संतुलन और आर्थिक स्थिरता के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। भारत जैसे देशों के लिए, हिंद महासागर में व्यापार और सुरक्षा बनाए रखना आवश्यक है। चीन की नीतियों, समुद्री डकैती, और अन्य सुरक्षा खतरों के बावजूद, हिंद महासागर भविष्य में भी विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था का केंद्र बना रहेगा।

3. भारत–मालदीव संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत और मालदीव के संबंधों का इतिहास गहराई और विविधता से भरा है। इन संबंधों का आधार सांस्कृतिक, व्यापारिक, और भौगोलिक कारकों पर आधारित है। समय के साथ, दोनों देशों के बीच सहयोग के कई आयाम विकसित हुए हैं, जिसमें आर्थिक, सुरक्षा और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्र शामिल हैं। ये संबंध केवल ऐतिहासिक धरोहर तक सीमित नहीं हैं,

बल्कि आज भी इनकी प्रासंगिकता क्षेत्रीय स्थिरता और विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

सांस्कृतिक एवं सामाजिक संबंध

भारत और मालदीव के सांस्कृतिक संबंध हजारों वर्षों पुराने हैं। प्राचीन समय में भारतीय व्यापारियों और नाविकों ने हिंद महासागर के माध्यम से मालदीव के साथ गहरे व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध स्थापित किए। इन व्यापार मार्गों ने न केवल वस्त्र, मसाले, और अन्य वस्तुओं का आदान–प्रदान किया, बल्कि परंपराओं और धार्मिक विचारधाराओं का भी आदान–प्रदान किया। बौद्ध धर्म का प्रभाव इसका एक प्रमुख उदाहरण है। इस्लाम के आगमन से पहले, मालदीव बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था, जिसे भारतीय उपमहाद्वीप से आए यात्रियों और व्यापारियों ने वहां स्थापित किया। 12वीं शताब्दी में इस्लाम को अपनाने के बाद भी, भारतीय भाषाओं, कला, और परंपराओं का प्रभाव मालदीव की संस्कृति में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह ऐतिहासिक जुड़ाव आज भी दोनों देशों के सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करता है। भारत के विदेश मंत्रालय, 2020 ने उल्लेख किया है कि दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंध केवल ऐतिहासिक नहीं हैं, बल्कि वर्तमान में भी भारतीय और मालदीव के लोगों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का सिलसिला जारी है।

भौगोलिक निकटता का प्रभाव

भारत और मालदीव के बीच की भौगोलिक निकटता दोनों देशों के संबंधों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। मालदीव, जो भारत के दक्षिण–पश्चिम में स्थित है, सामरिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह महासागर में फैले 1,200 से अधिक छोटे द्वीपों का समूह है, जो भारत के लक्षद्वीप समूह के पास है। यह निकटता भारत की समुद्री सुरक्षा और व्यापार के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

1988 में 'ऑपरेशन कैक्टस' के दौरान इस भूगोल का महत्व स्पष्ट रूप से देखा गया। जब मालदीव में तख्तापलट का प्रयास किया गया, तो भारत ने अपनी त्वरित सैन्य कार्रवाई से वहां की लोकतांत्रिक सरकार को बचाया। इस घटना ने दोनों देशों के संबंधों को और

गहरा किया और मालदीव ने भारत को अपना सबसे भरोसेमंद साझेदार माना। इसके अलावा, मालदीव का सामरिक स्थान हिंद महासागर में समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। ((भारत के रक्षा मंत्रालय, 1988)) के अनुसार, मालदीव और भारत के बीच की भौगोलिक निकटता न केवल आर्थिक और सुरक्षा क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देती है, बल्कि यह दोनों देशों के लिए एक रणनीतिक संपत्ति के रूप में कार्य करती है।

द्विपक्षीय सहयोग के प्रमुख क्षेत्र

1. आर्थिक सहयोग

भारत और मालदीव के बीच आर्थिक संबंध विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। भारत मालदीव का सबसे बड़ा व्यापारिक और निवेश साझेदार है। भारत ने मालदीव में बुनियादी ढांचे के विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य परियोजनाओं में भारी निवेश किया है। इसके अलावा, पर्यटन मालदीव की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है, जिसमें भारतीय पर्यटकों की बड़ी भूमिका है। मालदीव में भारतीय कंपनियां सौर ऊर्जा, परिवहन और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। ष्नेबरहुड फर्स्टष् नीति के तहत भारत ने मालदीव को आर्थिक संकटों से उबरने में भी मदद की है, जिसमें मुद्रा सहायता और सस्ती दरों पर ऋण शामिल हैं।

2. सुरक्षा

हिंद महासागर में सुरक्षा का मुद्दा दोनों देशों के लिए प्राथमिकता है। भारत ने मालदीव को समुद्री निगरानी उपकरण, गश्ती जहाज, और तटरक्षक प्रशिक्षण प्रदान किया है। दोनों देशों के बीच संयुक्त नौसैनिक अभ्यास नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। आतंकवाद और समुद्री डकैती जैसी समस्याओं से निपटने के लिए भारत मालदीव के साथ मिलकर काम कर रहा है। ((भारत के विदेश मंत्रालय, 2021)) ने यह स्वीकार किया है कि समुद्री सुरक्षा दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों का एक प्रमुख आयाम है, जो न केवल इस क्षेत्र की स्थिरता सुनिश्चित करता है, बल्कि वैश्विक समुद्री व्यापार को भी सुरक्षित बनाता है।

3. आपदा प्रबंधन

मालदीव अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील है। भारत ने इस दिशा में मालदीव को तकनीकी और मानवीय सहायता प्रदान की है। 2004 की सुनामी के दौरान भारत ने मालदीव को तत्काल राहत और पुनर्निर्माण सहायता प्रदान की। इसी तरह, COVID–19 महामारी के दौरान भारत ने मालदीव को वैक्सीन, चिकित्सा उपकरण और अन्य आवश्यक सहायता दी। ((भारत के विदेश मंत्रालय, 2021)) के अनुसार, भारत की 'वसुधैव कुटुंबकम' नीति के तहत मालदीव को प्राथमिकता दी जाती है, जो दोनों देशों के सहयोग की गहराई को दर्शाता है।

निष्कर्ष

भारत और मालदीव के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और भौगोलिक कारकों पर आधारित हैं। सांस्कृतिक आदान–प्रदान और व्यापारिक जुड़ाव ने इन संबंधों को मजबूत नींव प्रदान की है। भौगोलिक निकटता और साझा हितों के कारण दोनों देशों ने आर्थिक विकास, समुद्री सुरक्षा, और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में व्यापक सहयोग किया है। आने वाले समय में, इन संबंधों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ने की संभावना है, क्योंकि हिंद महासागर क्षेत्र में वैश्विक शक्ति संतुलन और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत और मालदीव के सहयोग की आवश्यकता होगी। इन मजबूत द्विपक्षीय संबंधों को भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' और 'सागर' (सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फॉर ऑल इन द रीजन) जैसी नीतियों के माध्यम से और मजबूती मिलने की संभावना है।

4. रणनीतिक संबंध और चुनौतियां

भारत और मालदीव के बीच रणनीतिक संबंध हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा, स्थिरता और शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये संबंध समुद्री सुरक्षा, सैन्य सहयोग, और आर्थिक भागीदारी जैसे क्षेत्रों में गहराई से जुड़े हुए हैं। हालांकि, इन संबंधों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें चीन की बढ़ती उपस्थिति और मालदीव की घरेलू राजनीति से उत्पन्न जटिलताएं शामिल हैं।

सुरक्षा और सैन्य सहयोग

भारत और मालदीव के बीच सुरक्षा और सैन्य सहयोग दोनों देशों के रणनीतिक संबंधों का एक प्रमुख स्तंभ है। 1988 में ष्ऑपरेशन कैक्टसष इसका ऐतिहासिक उदाहरण है। इस ऑपरेशन के तहत, भारत ने मालदीव की लोकतांत्रिक सरकार को तख्तापलट से बचाने के लिए त्वरित सैन्य कार्रवाई की थी। भारतीय सेना की इस कार्रवाई ने न केवल मालदीव की आंतरिक स्थिरता सुनिश्चित की, बल्कि भारत को क्षेत्र में एक जिम्मेदार और विश्वसनीय साझेदार के रूप में स्थापित किया। समुद्री सुरक्षा भी दोनों देशों के बीच सहयोग का एक महत्वपूर्ण पहलू है। हिंद महासागर में समुद्री डकैती, अवैध व्यापार, और आतंकवाद जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए भारत और मालदीव ने संयुक्त नौसैनिक अभ्यास और गश्त आयोजित किए हैं। भारत ने मालदीव को गश्ती जहाज, तटरक्षक उपकरण, और प्रशिक्षण सहायता प्रदान की है। इन प्रयासों ने मालदीव की समुद्री सुरक्षा क्षमताओं को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत और मालदीव के बीच समुद्री सहयोग हिंद महासागर की स्थिरता और क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह सहयोग केवल द्विपक्षीय नहीं है, बल्कि व्यापक क्षेत्रीय स्थिरता के लिए भी प्रासंगिक है ((भारत के रक्षा मंत्रालय, 1988))।

चीन की उपस्थिति

मालदीव में चीन की बढ़ती उपस्थिति भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक चिंता का विषय है। ष्बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिवष (ठत्प्) के तहत चीन ने मालदीव में बुनियादी ढांचे के विकास, विशेष रूप से बंदरगाहों, पुलों, और हवाई अड्डों में भारी निवेश किया है। इन निवेशों ने मालदीव की अर्थव्यवस्था को तो प्रोत्साहन दिया है, लेकिन साथ ही इसे चीन के ऋण जाल में फंसने का खतरा भी पैदा किया है। मालदीव में चीन की ष्स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्सष नीति, जो हिंद महासागर में उसकी सामरिक उपस्थिति को बढ़ाने के उद्देश्य से लागू की जा रही है, भारत की समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय प्रभुत्व के लिए चुनौती उत्पन्न करती है। मालदीव के रणनीतिक स्थान के कारण, भारत को यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो जाता है कि इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन उसके पक्ष में बना रहे।

चीन की उपस्थिति ने भारत को अपनी समुद्री रणनीति पर पुनर्विचार करने और अपने पड़ोसी देशों, विशेष रूप से मालदीव, के साथ संबंधों को और मजबूत करने के लिए प्रेरित किया है। भारत ने अपनी ष्नेबरहुड फर्स्टष् नीति और ष्सागरष् (सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फॉर ऑल इन द रीजन) के तहत मालदीव के साथ सहयोग बढ़ाया है ((कार्नेगी शांति संस्थान, 2021))।

राजनीतिक अस्थिरता

मालदीव की घरेलू राजनीति ने भारत–मालदीव संबंधों को जटिल बना दिया है। देश में राजनीतिक अस्थिरता और बार–बार होने वाले शासन परिवर्तन ने भारत और मालदीव के बीच नीति निरंतरता में बाधा उत्पन्न की है। कुछ समय के लिए मालदीव ने चीन के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किए, जिससे भारत की चिंताएं बढ़ गईं। इसके अलावा, मालदीव में विभिन्न राजनीतिक दलों के दृष्टिकोण ने भारत और चीन के बीच संतुलन बनाए रखने की कोशिश की है। हालांकि, हाल के वर्षों में, मालदीव ने भारत के साथ अपने रणनीतिक संबंधों को प्राथमिकता दी है। ष्इंडिया फर्स्टष् नीति के तहत, मालदीव ने भारत के साथ द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने और चीन के बढ़ते प्रभाव को सीमित करने के प्रयास किए हैं।

भारत के लिए, मालदीव की राजनीतिक स्थिरता अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखने का आधार है। मालदीव में राजनीतिक अस्थिरता का प्रभाव न केवल क्षेत्रीय शांति पर पड़ता है, बल्कि भारत के रणनीतिक हितों को भी प्रभावित करता है ((भारत के विदेश मंत्रालय, 2021))।

भारत और मालदीव के रणनीतिक संबंध हिंद महासागर में स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। 'ऑपरेशन कैक्टस' और समुद्री सुरक्षा में सहयोग ने इन संबंधों को एक मजबूत आधार प्रदान किया है। हालांकि, चीन की उपस्थिति और मालदीव की राजनीतिक अस्थिरता ने इन संबंधों को नई चुनौतियों के सामने ला खड़ा किया है।

भारत के लिए, यह आवश्यक है कि वह मालदीव के साथ अपने संबंधों को मजबूत बनाए रखे और चीन की रणनीतिक नीतियों का प्रभाव कम करने के लिए प्रभावी कदम उठाए। हिंद महासागर में शक्ति संतुलन बनाए रखने और क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए भारत और मालदीव के बीच सहयोग का विस्तार करना समय की मांग है।

5. इंडो–पैसिफिक और भारत–मालदीव की भूमिका

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र विश्व के सबसे महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक और रणनीतिक क्षेत्रों में से एक है। इस क्षेत्र का रणनीतिक महत्व न केवल वैश्विक व्यापार मार्गों के दृष्टिकोण से है, बल्कि यह समुद्री सुरक्षा, शक्ति संतुलन और क्षेत्रीय सहयोग के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत और मालदीव की इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका है, खासकर भारत की ष्सागरष् नीति के तहत, जो सुरक्षा और विकास के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देती है।

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र की परिभाषा और महत्व

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र का विस्तार हिंद महासागर से लेकर प्रशांत महासागर तक है, जो एशिया, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और अमेरिका को जोड़ता है। यह क्षेत्र वैश्विक व्यापार का केंद्र है, जहां से विशाल मात्रा में वस्तुओं का परिवहन होता है, जिसमें तेल, गैस, खनिज और अन्य सामान शामिल हैं। इंडो–पैसिफिक की भौगोलिक स्थिति इसे वैश्विक शक्ति और व्यापार के लिए एक केंद्रीय स्थान बनाती है। यह क्षेत्र केवल व्यापारिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि समुद्री सुरक्षा, राजनीतिक प्रभाव और वैश्विक शक्ति संतुलन के लिए भी महत्वपूर्ण है। यहां से होकर गुजरने वाली समुद्री मार्गों की सुरक्षा का सीधे प्रभाव दुनिया की आर्थिक और सैन्य स्थिरता पर पड़ता है। विशेष रूप से, चीन की बढ़ती समुद्री उपस्थिति और बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के तहत उसके निवेश, इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन को प्रभावित कर रहे हैं।

इस संदर्भ में, भारत और मालदीव जैसे देशों की भूमिका और बढ़ जाती है। दोनों देश इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में क्षेत्रीय सुरक्षा, व्यापारिक मार्गों की रक्षा, और समग्र स्थिरता के लिए सहयोग करते हैं। ((भारतीय विदेश मंत्रालय, 2021)) के अनुसार, भारत के लिए यह क्षेत्र

सुरक्षा और विकास दोनों के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, और उसकी रणनीतिक नीति ष्सागरष् इसका आधार है।

भारत की सागर नीति

भारत की 'सागर' (Security and Growth for All in the Region) नीति, जो 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत की गई थी, इस क्षेत्र में सुरक्षा और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देती है। यह नीति हिंद महासागर और इंडो–पैसिफिक क्षेत्र के देशों के साथ समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में गहरे संबंध बनाने की दिशा में काम करती है। भारत का उद्देश्य है कि वह क्षेत्रीय देशों के साथ मिलकर इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा, और अन्य वैश्विक खतरों से निपटने के लिए साझा प्रयास करें। भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल इस नीति के तहत विभिन्न क्षेत्रीय देशों के साथ संयुक्त अभ्यास और समुद्री गश्ती अभियानों में भाग लेते हैं। इसके अलावा, भारत ने क्षेत्रीय देशों को समुद्री सुरक्षा उपकरण और प्रशिक्षण प्रदान किया है। भारत की सागर नीति इस तथ्य पर आधारित है कि समुद्री सुरक्षा केवल तटीय सुरक्षा नहीं है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र के लिए आवश्यक है। मालदीव, श्रीलंका, मॉरीशस जैसे देशों के साथ भारत ने इस नीति के तहत सहयोग को बढ़ावा दिया है, ताकि हिंद महासागर में शांति और स्थिरता बनाए रखी जा सके।

((भारत के रक्षा मंत्रालय, 2015)) के अनुसार, सागर नीति के तहत भारत ने समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, और आर्थिक विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मालदीव की भूमिका

मालदीव का हिंद महासागर में एक रणनीतिक स्थान है, जो उसे क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा की स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की स्थिति में रखता है। मालदीव की स्थिति के कारण, यह देश भारतीय और अन्य समुद्री शक्तियों के लिए एक महत्वपूर्ण साझेदार बन गया है। मालदीव की भूमिका केवल समुद्री सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय स्थिरता, व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा, और आतंकवाद जैसे वैश्विक खतरों से निपटने के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। मालदीव, भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे नजदीकी देशों में से एक

है और उसकी भौगोलिक स्थिति हिंद महासागर में शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। भारत और मालदीव के बीच सुरक्षा संबंधों का गहरा इतिहास है, विशेष रूप से 1988 में ष्ऑपरेशन कैक्टसष् के दौरान जब भारत ने मालदीव की लोकतांत्रिक सरकार को तख्तापलट से बचाया था। यह घटना दोनों देशों के बीच स्थिर और रणनीतिक साझेदारी का आधार बनी। मालदीव का चीन के साथ बढ़ता हुआ जुड़ाव, विशेष रूप से ष्बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिवष् के तहत, भारत के लिए एक चुनौती पैदा करता है, लेकिन भारत ने इस क्षेत्र में अपनी शक्ति को बनाए रखने के लिए मालदीव के साथ संबंधों को मजबूत किया है। मालदीव को भारत के लिए एक रणनीतिक साझेदार के रूप में देखा जाता है, जो इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा बनाए रखने में सहायक है। ((भारत के विदेश मंत्रालय, 2021)) के अनुसार, मालदीव की भूमिका हिंद महासागर और इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में सुरक्षा, विकास और स्थिरता में महत्वपूर्ण है, और इस संदर्भ में भारत के साथ सहयोग बढ़ाने के लिए भारत ने कई कदम उठाए हैं।

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में भारत और मालदीव की भूमिका रणनीतिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। भारत की सागर नीति के तहत दोनों देशों के बीच समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, और आर्थिक सहयोग बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं। मालदीव की रणनीतिक स्थिति हिंद महासागर में स्थिरता और सुरक्षा बनाए रखने के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाती है। भारत और मालदीव के बीच सहयोग, विशेष रूप से इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में, न केवल द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करता है, बल्कि क्षेत्रीय शांति और समृद्धि को भी सुनिश्चित करता है। इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखने और वैश्विक खतरों का मुकाबला करने के लिए दोनों देशों के बीच साझेदारी महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

निष्कर्ष

भारत और मालदीव के बीच संबंध हिंद महासागर क्षेत्र की स्थिरता, सुरक्षा और समृद्धि में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और रणनीतिक संबंध, जिन्हें बढ़ावा देने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग किया गया है, क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा के लिए अनिवार्य हैं। भारत की सागर नीति, जो हिंद महासागर और

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र की सुरक्षा और विकास को प्रोत्साहित करती है, इस क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने का एक प्रमुख तत्व बन गई है। मालदीव की भौगोलिक स्थिति और सामरिक महत्त्व इसे भारत के लिए एक अनिवार्य साझेदार बनाता है। समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद–रोधी उपाय, और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच मजबूत सहयोग ने न केवल द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ किया है, बल्कि यह हिंद महासागर क्षेत्र की सुरक्षा के लिए भी सहायक सिद्ध हुआ है।

चीन की बढ़ती उपस्थिति और उसकी समुद्री नीति षस्ट्रिंग ऑफ पर्ल्सष के तहत किए गए निवेश ने भारत के लिए नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं, लेकिन भारत ने मालदीव के साथ संबंधों को मजबूती से बढ़ाया है, ताकि हिंद महासागर में शक्ति संतुलन बनाए रखा जा सके। आखिरकार, यह स्पष्ट है कि भारत और मालदीव के बीच सहयोग केवल द्विपक्षीय नहीं है, बल्कि यह हिंद महासागर क्षेत्र की समग्र स्थिरता, सुरक्षा और समृद्धि के लिए अनिवार्य है। भविष्य में, इन दोनों देशों के संबंध और भी मजबूत होंगे और साथ मिलकर वे इस क्षेत्र को अधिक सुरक्षित, स्थिर और समृद्ध बनाने की दिशा में कार्य करेंगे।

संदर्भ

1. अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (2022), वार्षिक व्यापार और सुरक्षा रिपोर्ट, अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन, पृष्ठ 45।
2. विश्व व्यापार संगठन (2020), समुद्री व्यापार अवलोकन, विश्व व्यापार संगठन, पृष्ठ 32।
3. भारत के विदेश मंत्रालय (2021), समुद्री रणनीति दस्तावेज, भारत सरकार, पृष्ठ 56।
4. भारत के रक्षा मंत्रालय (1988), ऑपरेशन कैक्टस समीक्षा रिपोर्ट, भारत सरकार, पृष्ठ 12।
5. भारत के विदेश मंत्रालय (2020), भारत–मालदीव द्विपक्षीय संबंध रिपोर्ट, भारत सरकार, पृष्ठ 78।
6. कार्नेगी शांति संस्थान (2021), दक्षिण एशिया रणनीतिक समीक्षा, कार्नेगी, पृष्ठ 89।
7. भारतीय नौसेना (2019), वार्षिक रिपोर्ट, भारत सरकार, पृष्ठ 34।

8. मालदीव का वित्त मंत्रालय (2020), आर्थिक सहयोग रिपोर्ट, मालदीव सरकार, पृष्ठ 21।
9. अंतर्राष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा एजेंसी (2022), हिंद महासागर में नवीकरणीय ऊर्जा निवेश, अंतर्राष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा एजेंसी, पृष्ठ 15।
10. एशियाई अवसंरचना निवेश बैंक (2021), ऋण विश्लेषण रिपोर्ट, एआईआईबी, पृष्ठ 43।